© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

दक्षिण हरियाणा के इतिहास में राव तुलाराम और नसीबपुर युद्व : एक अध्ययन

Ravi Dutt, Research Scholar
Supervisor Dr Mohammad Shahnawaz

सार : 1857 की क्रांति के दौर में भारतीय शासकों और अंग्रेजों के बीच अनेक युद्व लडे गए। उन्में से नसीबपुर का युद्व भी अपनी ऐतिहासिक प्रांसागिकता रखता है। यह युद्व दक्षिण हरियाणा के वर्तमान जिला नारनौल के नसीबपुर में लडा गया। जिसमें रेवाडी रियासत के प्रमुख राव तुलाराम ने अग्रणी भूमिका अदा की थी। हालांकि युद्व के अन्तिम क्षण में अंग्रेजों की ही जीत हुई। लेकिन राव तुलाराम की सेना अपनी वीरता, साहस और शौर्य का प्रदर्शन करते हुए युद्व को अपने पक्ष में करने के लिए लगातार प्रयाशरत रही।

भारत के प्रथम गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी के काल से लगभग तय हो गया था कि अब वो दिन दूर नही जब सम्पूर्ण भारतीय भूमि, धर्म, राजनीति और आर्थिक संसाधनों पर अंग्रजो का अधिकार हो जाएगा। जिसको अंग्रेजों ने 1857 की क्रांति तक अन्तिम परिणति तक पहुंचा दिया।

इसके लिए अंग्रेजों ने अनेक प्रकार के तौर तरीके अपनाने पडे। इन तौर तरीको के परिणामस्वरुप ही 1857 की क्रांति का जन्म हुआ। क्रान्ति में अंग्रेजी सेना और भारतीयों राजाओं की सेना के मध्य कई युद्व लडे गए। अंग्रेजी सेना भारतीय राजाओं की सेना को हराकर उस क्षेत्र को अपने अधीन कर लेती थी। अपनी इसी आश के साथ अंग्रेजी सेना रेवाडी को भी अपने अधीन करने के लिए रेवाडी की तरफ कूच किया था तभी अंग्रेजी सेना और रेवाडी नरेश राव तुलाराम की सेना के मध्य नसीबपुर का युद्व लडा गया।

अंग्रेजी सरकार ने रेवाडी और रेवाडी की अधीन आस पास के इलाकों के विद्रोह का दमन करने की जिम्मेवारी बिग्रेडियर शावर्स की दी गई। शावर्स की सेना 05 अक्टूबर 1857 को

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

पटौदी क्षेत्र में पहुची। उस समय पटौदी का क्षेत्र राव तुलाराम के अधीन था। 05 अक्टूबर को ही शावर्स की सेना और राव तुलाराम की सेना के मध्य पटौदी में हल्की झडप हुई।[1]

इस हल्की की झडप में अंग्रेजी सेना राव तुलाराम की सेना पर भारी पडती नजर आई। इससे राव तुलाराम को अंग्रेजों की शक्ति का अहसास हो गया। वह समझ गया था कि अंग्रेजों के खिलाफ सीधी लडाई उनके लिए विनाशकारी सिद्व हो सकती है। उसी समय नन्होने बिना वक्त गवाए अपने सभी क्रान्तिकारियों , सेनापतियों और आक्रमणकारियों से सभा करकर आगे की रणनीति के लिए गहन विचार विमर्श किया। सर्वसहमति से सभी ने यह फैसला लिया कि रामपुरा किले को छोडकर किसी सुरक्षित स्थान से अंग्रेजो का मुकाबला किया जाए।[2]

अग्रेज सेनापति शावर्स 06 अक्टूबर को पटौदी होते हुए रेवाडी के रामपुरा में पहुंचा और यहा पर अंग्रेजी सेना को किसी भी प्रकार का विरोध का सामना नही करना पडी परिणामस्वरुप विरोधरहित रामपुरा किले को कब्जे में ले लिया। रामपुरा किले में अंग्रेजी सेना को भारी मात्रा में अस्त्र शस्त्र प्राप्त हुए।[3] शावर्स ने रामपुरा किले पर कब्जा करने के बाद अपना एक दूतमंडल सधि के लिए राव तुलाराम के पास भेजा लेकिन राव तुलाराम ने संधि प्रस्ताव को ठुकरा दिया।[4] इससे अंग्रेजों के समझ मे आ गया कि राव तुलाराम आसानी से हार मानने वाला नही है। उन्होने रामपुरा किले को छोडकर कानोंड की ओर कदम रखा। लेकिन इसका लाभ राव तुलाराम को मिला और उन्होने पुनः रामपुरा किले को अपने कब्जे में कर लिया।[5]

---

1 हरियाणा में 1857 की क्रान्ति, पूर्वोद्वत, पेज न0 113

2 क्रान्ति दूत राव राजा तुलाराम, पूर्वोद्वत, पेज न0 57

3 वही, पेज न0 62
फाईल न0 32, हरियाणा राज्य अभिलेखागार

4 क्रान्ति दूत राव राजा तुलाराम, पूर्वोद्वत, पेज न0 62

5 वही

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

अब अंगेजी सेना को अपनी रणनीति बदलनी पडी। उन्होने राव तुलाराम पर सीधा आक्रमण ना करके रेवाडी रियासत के आसपास के गांवो को कब्जें में लेना आरम्भ कर दिया। इस कडी में झज्जर, फर्रुखनगर और बल्लभगढ के अधिकतर हिस्सों को अपने कब्जे में कर लिया गया। इस दौरान काफी क्षेत्रों में अंग्रेजों को क्रान्तिकारियों के विद्रोह का सामना करना पडा। लेकिन अंग्रेजो ने बिना किसी दया और रहम के प्रत्येक विद्रोह का सख्ती से दमन करते हुए क्रान्तिकारियों को फांसी दे दी जाती थी। झज्जर, फर्रुखनगर और बल्लभगढ के नवाब राजा नाहर सिंह को दिल्ली के चांदनी चौक पर फांसी दी गई।[6]

अब अंग्रेजों के लिए राव तुलाराम और उनके साथी क्रान्तिकारी शहजादा मुहम्मद हिसार, शेखावती राजपुत, मेवात के मेव सरदार और जनरल समद खॉ को ही गिरफतार करना बचा हुआ था। शुरुआती दौर में अंग्रेजी सेना इन क्रान्तिकारियों को गिरफतार करने में विफल रहे।[7] लेकिन अंग्रेज लगातार इन सभी की क्रांतिकारियों की गतिविधियों पर पैनी नजर बनाए हुए थे। उन्होने बडी ही कूटनीति के साथ 10 नवम्बर 1857 को कर्नल जेरार्ड के नेतृत्व में उच्चस्तरीय अस्त्र शस्त्र और लगभग 1500 सैनिको के साथ एक बडा सैन्य दल को रेवाडी पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया।[8]

राव तुलाराम जेरार्ड के सैन्य बल के पहुंचने से पहले ही रेवाडी को छोडकर नारनौल की ओर चले गए। इसके अलावा उनके मुख्य क्रान्तिकारियों में से एक राव किशन सिंह भी अपने सैन्य बल के साथ नारनौल पहुंचकर राव तुलाराम के सैन्य बल मे मिल गया। अपने प्राकृतिक

---

6 वही, पेज न0 63

7 एफ0 एस0 सी0 न0 145–153, 02 जुलाई 1857, भारतीय पुरातत्व अभिलेखागार

क्रान्ति दूत राव राजा तुलाराम, पूर्वोद्वत, पेज न0 62

8 वही, पेज न0 63

गुप्तचर विभाग के दस्तावेज, एन0 डब्लयु0 पी0 वोल011, पेज न0 272–73

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

कारणों से नारनौल क्रान्तिकारियों के लिए बहुत ही सुरक्षित जगह थी। कर्नल मालसेन के अनुसार नारनौल एक बहुत ही मजबूत जगह थी। यह लगभग 400फीट उंची एक पहाडी के नीचे की जगह थी। यह सामने से ढकी हुई थी जिसके कारण सेना को एक रक्षात्मक आवरण मिला हुआ था। यहां के मैदान समतल थे जिसे घुडसवार सेना के अनुकूल माना जाता है।[9]

दूसरी तरफ जेरार्ड का सैन्य बल 14 नवम्बर 1857 को रेवाडी पंहुचा तो उसे रेवाडी में कुछ भी नही मिला जिसके कारण वह काफी परेशान हों गया क्योकि जेरार्ड को अंग्रेजी सरकार की तरफ से आदेश दिया गया था कि राव तुलाराम को जीवित पकडकर लाया जाए। लेकिन जेरार्ड को रेवाडी पहुचने तक अपने लक्ष्य की प्राप्ति नही हो पाईं। जिसके कारण उन्होने अतिरिक्त सेना की मांग की ताकि काफी दूरी तक राव तुलाराम और उनके साथियों का पिछा किया जा सके।[10] बहुत जल्दी पंजाब सैन्य दस्ता भी जेरार्ड की सेना में आ मिला। अब जेरार्ड ने अपने पूरे सैन्य दस्ते को 16 नवम्बर 1857 को नारनौल की तरफ कूच कर दिया।[11]

उधर राव तुलाराम को जैसे ही यह पता चला कि जेरार्ड का बडा सैन्य दस्ता उन पर आक्रमण करने के लिए आ रहा है, वैसे ही उन्होने आस पास के शासकों से सहायता मांगी लेकिन किसी से भी कोई सहायता प्राप्त नही हुई। कोई सहायता प्राप्त ना होने के कारण राव तुलाराम और उनके क्रान्तिकारी साथियों ने स्वयं ही अंग्रेजों पर आक्रमण करने का निर्णय लिया। जेरार्ड की सेना नारनौल से कुछ पहले नसीबपुर में आराम करने के लिए ठहरी और उनके सैनिक भोजन करने लग गए। सैनिक भोजन कर ही रहे थे, उनके सामने कुछ दूरी पर धूल के बादल से दिखाई देने लगे। यह धूल के बादल राव राजा की सेना थी। 17 नवम्बर 1857 को दिन में 12 बजे राव राजा की सेना और अंग्रेजी सेना के मध्य नसीबपुर का ऐतिहासिक युद्व आरम्भ हो गया।[12]

---

9 ए हिस्टी आफ म्युटिनि 1857–58, की एंड मालसेन, वोल्युम 11,पेज न0 75

10 क्रान्ति दूत राव राजा तुलाराम, पूर्वोद्वत, पेज न0 64

11 वही

12 क्रान्ति दूत राव राजा तुलाराम, पूर्वोद्वत, पेज न0 65

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

युद्व आरम्भ होते ही भारतीय सेना अंग्रेजी सेना पर भूखें शेर की तरह टूट पडी जिसके कारण अंग्रेजी सेना प्रथम आक्रमण का कोई बहुत बडा प्रतिशोध नही कर पाई।[13] जिसके कारण भारतीय सेना अंग्रेजी सेना पर भारी पडती नजर आईं। इसी बीच भारतीय सेना के महान कमांडर राव किशन सिंह ने घोडे पर सवार होकर अपनी धारदार तलवार से अंग्रेज सेनापति जेरार्ड की गर्दन कलम कर दी। इससे अंग्रेजी सेना भयभीत हो गई।[14] लेकिन कुछ समय बाद अंग्रेजी कारबायनियर्स और गाइडस ने कुछ साहस दिखाते हुए भारतीय सेना को रोककर अंग्रेजी सेना को सम्भलने का मौका दे दिया। लेकिन अंग्रेज अपनी स्थिति को सम्भाल नही पाए।[15]

कुछ समय बाद राव तुलाराम का बहादुर कमांडर राव किशन सिंह वीरगति को प्राप्त हो गए। इससे भारतीय सेना के हौंसले ठंडे पड गए लेकिन सेना ने अपनी हार नही मानी। अब राव राजा स्वयं राव किशन सिंह की शहादत का बदला लेने के लिए युद्व मैदान में कुद पडे। राव राजा के हाथ में तलवार को देखकर अंग्रेजी सेना में पुनः भगदड मच गईं।[16]

राव तुलाराम के मोर्चा सम्भालने के बाद भारतीय सेना बहुत बहादुरी के साथ लडती रही। इससे अंग्रेज सेना के नए कमांडर कोलफील्ड को महसूस हो गया था कि भारतीय सेना पर नियंत्रण करना बहुत मुश्किल होगा। उन्होने नाभा, पटियाला और गौरखा सैनिको को भी युद्व में शामिल कर लिया।[17] कमांडर के द्वारा तोपखाने को भयंकर आग उगलने का आदेश दिया गया। जिससे आग के गोले भारतीय सेना के मध्य में गिरने लगे। परिणामस्वरुप भारतीय सेना दो भागों मे विभाजित हो गई। इससे सेना की सम्मिलित शक्ति टूट गई और अंग्रेज सेना ने भारतीय सेना

---

13 वही

हरियाणा में 1857 की क्रान्ति, पूर्वोद्वत, पेज न0 118

14 क्रान्ति दूत राव राजा तुलाराम, पूर्वोद्वत, पेज न0 65

15 वही

16 क्रान्ति दूत राव राजा तुलाराम, पूर्वोद्वत, पेज न0 66

17 वही

को चारों ओर से घेर लिया। इसी बीच भरतीय सेना के महान सेनापति राव रामलाल, मुहम्मद आजम ओर जनरल समद खा का बेटा वीरगति को प्राप्त हो गया।[18]

इतनी भारी क्षति के बाद राव सेना का पांव उखडने लग गए लेकिन राव राजा और जनरल समद खा ने सेना का हौसले बढाने का भरपूर प्रयाश किया। लेकिन हथियारों की कमी बाधा बन गईं। अंग्रेजों ने भारतीय सेना के अधिकतर सैनिको को मौत के घाट उतार दिया। इसी दौरान राव तुलाराम भी घायल हो गए तभी समद खां के आग्रह और भविष्य में पुनः युद्व की आशा से राव तुलाराम अंग्रेजों से बन्दी बनने की बजाय रात्रि के अंधेरे का लाभ उठाकर युद्वभूमि छोडकर चले गए। नसीबपुर युद्व अंग्रेजो के पक्ष में चला गया।[19]

18 वही

19 वही